FYUGP

KURUKH MAJOR/ RESEARCH

FOR UNDER GRADUATE COURSES UNDER RANCHI UNIVERSITY, RANCHI

Implemented from

Academic Session 2022-2026

दूरभाष :

विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

मोराबादी, राँची– 834008

पत्रांक : .... दिनांक : ....

Members of board of studies for preparing syllabus of the four-year under graduate programme (FYUGP)

आज दिनांक 22.09.2022 को अपराह्न 02:00 बजे विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग में विभागाध्यक्ष डॉ० हरि उराँव की अध्यक्षता में कुँड़ुख़ के NEP चार वर्षीय स्नातक पाठ्यक्रम के सम्बन्ध में पाठ्यक्रम समिति (BOS) की एक बैठक सम्पन्न हुई। इस बैठक में निम्नलिखित सदस्य उपस्थित हुए, जिनका नाम निम्नवत् है :–

स्नातक पाठ्यक्रम परिषद के बाह्य सदस्य :

1. प्रो० रामदास उराँव

   विभागाध्यक्ष कुँड़ुख़ विभाग, डॉ० श्यामा प्रसाद मुखर्जी विश्वविद्यालय, राँची
2. सोमरा उराँव

   विभागाध्यक्ष कुँड़ुख़ विभाग, माण्डर कॉलेज, माण्डर, राँची विश्वविद्यालय, राँची

विभागीय सदस्य :

1. डॉ० हरि उराँव
   समन्वयक/विभागाध्यक्ष, विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
2. डॉ० राम किशोर भगत
   विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
3. बिरेन्द्र उराँव
   विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची
4. धीरज उराँव
   विश्वविद्यालय कुँड़ुख़ विभाग, राँची विश्वविद्यालय, राँची

उक्त बैठक में सर्व सम्मति से पाठ्यक्रम को स्वीकृति प्रदान की गई तथा यह निर्णय लिया गया कि पाठ्यक्रम को विश्वविद्यलय भेजा जाय।

कुँडुख़ स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य

कुँडुख़ स्नातक पाठ्यक्रम का उद्देश्य निम्नांकित लक्ष्यों को प्राप्त करना है :

1. कुँडुख़ साहित्य का अध्ययन प्रस्तुत करना।
2. कुँडुख़ भाषा, साहित्य और समाज को समझने में लोगों को मदद करना।
3. नई पीढ़ी को कुँडुख़ साहित्य की ओर प्रेरित करना।
4. कुँडुख़ साहित्य के रचनाकारों को समाज में प्रतिष्ठित करना और उनके कृतियों को प्रकाश में लाना।
5. कुँडुख़ साहित्य के महत्व और प्रतिष्ठा में वृद्धि करना।
6. कुँडुख़ साहित्य का संकलन, संचयन, प्रकाशन और मूल्यांकन को दिशा देना।
7. विद्यार्थियों को कुशल, संवेदनशील और जिम्मेवार नागरिक बनाना।
8. भाषा संबंधी कौशल का विकास करना।
9. उच्चारण, वर्तनी और लिपि का सही ज्ञान कराना।
10. मूलभूत, कौशल यथा–लेखन, श्रवण और अभिव्यक्ति कला को विकसित करना।
11. एक कुशल वक्ता का निर्माण करना।
12. विभिन्न साहित्यिक विधाओं की जानकारी देना।
13. स्थानीय से लेकर वैश्विक स्तर तक के विभिन्न विशिष्ट साहित्यों से परिचित कराना।
14. समाज और समुदाय के प्रति संवेदनशील दृष्टि का विकास करना
15. समाज के विभिन्न समुदायों के प्रति सहिष्णुता एवं मैत्रीपूर्ण भावना का विकास करना।
16. मानवीय मूल्यों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण विकसित करना।
17. साहित्य में राष्ट्र और राष्ट्रवाद के सही अर्थों को बताना।
18. राष्ट्रीय चेतना का विकास करना।

कुँड़ुख़ स्नातक पाठ्यक्रम का अधिगम परिणाम

स्नातक कुँड़ुख़ (प्रतिष्ठा) पाठ्यक्रम से संबद्ध अधिगम परिणाम इस प्रकार है :

1. साहित्य संप्रेषण के आधार बिंदुओं की जानकारी देना ताकि साहित्य के सम्बन्ध में एक स्पष्ट समझ विकसित हो सके।
2. कुँड़ुख़ साहित्य और भाषा का व्यवस्थित और तर्कसंगत ज्ञान कराना ताकि उसके सैद्धांतिक पक्ष और साहित्यिक विकास के सम्बन्ध में पर्याप्त जानकारी मिल सके।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं को पढ़ने और समझने की योग्यता का विकास करना।
4. साहित्य लेखन की विविध शैली और समीक्षात्मक दृष्टि का विकास करना।
5. स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक सांस्कृतिकता के वृहद संजाल के बारे में जानकारी देना ताकि विद्यार्थी में साहित्यिक मूल्यांकन की योग्यता विकसित हो सके।
6. समीच्य दृष्टि और व्यवस्थित वैचारिकी का प्रर्दशन करना जिससे कुँड़ुख़ साहित्य के अध्ययन के प्रति जिज्ञासा और प्रश्न उत्पन्न हो सके।
7. आधुनिक संदर्भ में तकनीकी संसाधनों को इस्तेमाल करते हुए कुँड़ुख़ साहित्य की जानकारी देना।
8. प्रत्येक स्तर पर जीवन के मूल्यों और साहित्यिक मूल्यों का निर्धारण करने की क्षमता और ज्ञान का विकास करना।
9. विद्यार्थी में श्रवण, लेखन और वचन के साथ–साथ कल्पना शक्ति का विकास करना जिससे कि उसके समग्र व्यक्तित्व में निखार आ सके।
10. साहित्य के अध्ययन के बाद रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करते हुए रोजगार के नए मार्ग को तलाशना।
11. वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है जिसमें अभिव्यक्ति की प्रधानता है ऐसे में तकनीकी के विकास ने साहित्य संचरण को अत्यंत सुगम बना दिया है इसी के परिप्रेक्ष्य मे ंकुँड़ुख़ साहित्य लेखन और अनुवाद का मंच प्रदान करना जिसका उपयोग कर जनसंचार से लेकर व्यक्तित्व विकास तक में विद्यार्थी निष्णात हो सके। विद्यार्थी की रूचियों को एक व्यवस्थित रूप देना और उन्हें विभिन्न विधाओं में से चयन की स्वतंत्रता प्रदान करना ताकि वे स्नातक पाठ्यक्रम के पूर्ण होने के बाद खुद ही साहित्य के विभिन्न क्षेत्रों में से अपनी रूचि के अनुसार चयन कर सकें।
12. भारत के साहित्यिक, सांस्कृतिक और भाषाई विविधता को जानने के प्रति जागरूकता पैदा करना भी कुँड़ुख़ साहित्य के अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य है।

I. MAJOR COURSE – MJ 1 : कुँडुख़ साहित्य का इतिहास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँडुख़ साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. कुँडुख़ साहित्य की नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार और विशेषताओं के बार में जान सकेंगे।
3. कुँडुख़ पद्य–गद्य साहित्य के इतिहास का सामान्य परिचय से परिचित हो सकेंगे।
4. कुँडुख़ साहित्य के काल विभाजन से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 कुँडुख़ की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि, उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार, विशेषताएँ।

इकाई– 2 कुँडुख़ पद्य–गद्य साहित्य का इतिहास–सामान्य परिचय

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

सहायक ग्रंथें :

❖ उराँव भाषा और साहित्य – जगदीश त्रिगुणायत
❖ कुँडुख़ भाषा साहित्य एक परीचय – विजय आशीष कुजूर
❖ छोटानागपुर के उराँव रीति–रिवाज – डॉ० नारायण भगत
❖ कुँडुख़ भाषा–साहित्य का उद्भव एवं विकास – महेश भगत
❖ जनजातीय भाषाएँ और मिशनरी – नागेश्वर सिंह

I. MAJOR COURSE – MJ 2 : कुँड़ुख़ लोकसाहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ लोकसाहित्य की अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को जान सकेंगे।
2. कुँड़ुख़ लोकसाहित्य के लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं लोकनृत्य से परिचित होंगे तथा उनकी परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को भी जान सकेंगे।
3. कुँड़ुख़ प्रकीर्ण साहित्य के अंतर्गत लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेलगीत से परिचित होंगे तथा उनकी परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ और महत्व को भी जान सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 अवधारणा, परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई– 2 लोकगीत, लोककथा, लोकगाथा, लोकनाट्य एवं लोकनृत्य–परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई– 3 प्रकीर्ण साहित्य –लोकोक्ति, मुहावरे, पहेली, मंत्र, खेल गीत–परिभाषा, वर्गीकरण, विशेषताएँ, महत्व।

सहायक ग्रंथें :

❖ उराँव लोकसाहित्य – डॉ० तेतरू उराँव
❖ कुँड़ुख़ लोकसाहित्य – प्रकाशक – जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची
❖ लील खोरआ ख़ेख़ेल (प्रकींण साहित्य भाग) – डब्लू० जी० आर्चर
❖ कुँड़ुख़ पुरखा ख़ीरी – अहलाद तिर्की
❖ पुरखर गहि तिंगका ख़ीरी – भीखू तिर्की
❖ कुँड़ुख़ गहि लूरगर कत्था – भीखू तिर्की
❖ कुँड़ुख़ जेट्ठ जतरा – सोमरा तिर्की
❖ साहे डण्डी – डॉ० नारायण भगत

I. MAJOR COURE – MJ 3 : कुँडुख़ व्याकरण

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँडुख़ व्याकरण की ध्वनि, अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान और वर्तनी से परिचित हो सकेंगे।
2. कुँडुख़ के सम्पूर्ण व्याकरण पाठ्य को जान सकेंगे।

1.प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 ध्वनि, अक्षर ज्ञान, शब्द ज्ञान, वाक्य ज्ञान, वर्त्तनी

इकाई– 2 संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया, क्रिया–विशेषण, लिंग, कारक, वचन, काल

उपसर्ग, प्रत्यय, संधि, समास, पर्यायवाची शब्द, श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

सहायक ग्रंथें :

❖ कुँडुख़ कत्थअइन (व्याकरण भाग) – चौठी उराँव
❖ कुँडुख़ कत्थअइन अरा पिंजसोर – डॉ० नारायण उराँव
❖ आधुनिक कुँडुख़ व्याकरण – डॉ० नारायण भगत
❖ कुँडुख़ कत्था बिल्ली – पी० सी० बेक
❖ कुँडुख़ सहिया – अहलाद तिर्की
❖ कुँडुख़ कत्थपून – प्रेम चंद उराँव

I. MAJOR COURSE – MJ 4 : कुँड़ुख़ कवि एवं उनके काव्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ कवि एवं उनके काव्यों को गहराई से जान सकेंगे।
2. कुँड़ुख़ के प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल के कवियों से परिचित होगें।

1 **प्रस्तावितसंरचना**

इकाई– 1 प्राचीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई– 2 मध्यकालीन कवियों का परिचय एवं काव्य

इकाई– 3 आधुनिक कवियों का परिचय एवं काव्य

सहायक ग्रंथें :

- उराँव साहित्यकार – डॉ० कोर्नेलियुस मिंज
- मुन्ता पूंप झूम्पा – दवले कुजूर
- पुना खोर – इन्द्रजीत उराँव
- दव बिल्ली – बसंती कुमारी कुजूर
- अराध्य देव वृक्ष करम – सरन उराँव
- अद्दी धरम – देवचरण भगत

II. MAJOR COURSE – MJ 5 : कुँड़ुख़ साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ साहित्यकार एवं उनकी कृतियाँ को गहराई से जान सकेंगे।
2. कुँड़ुख़ के प्राचीन काल, मध्यकाल एवं आधुनिक काल के साहित्यकार से परिचित होगें।

1.**प्रस्तावितसंरचना**

इकाई– 1 प्राचीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई– 2 मध्यकालीन साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

इकाई– 3 आधुनिक साहित्यकारों का परिचय एवं कृतियाँ

सहायक ग्रंथें :

- उराँव साहित्यकार – डॉ० कोर्नेलियुस मिंज
- कुँड़ुख़ भाषा–साहित्य का उद्भव एवं विकास – महेश भगत

I. MAJOR COURSE – MJ 6 : कुँड़ुख़ गद्य साहित्य

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ साहित्य की विस्तृत गद्य विधाओं से परिचित होगें।
2. गद्य साहित्य के माध्यम से युगीन राजनीतिक, समाजिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक परिवेशों का ज्ञान प्राप्त हो सकेगा।
3. नाटक के माध्यम से विद्यार्थियों में अभिव्यक्ति कला का विकास होगा।
4. कथा साहित्य के माध्यम से विद्यार्थी सम्पूर्ण मानव जगत की मानवीयता से परिचित होंगे।
5. निबंध साहित्य के अध्ययन से विद्यार्थियों में लेखन शैली में सुदृढ़ होगी।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई–1 कहानी, उपन्यास, नाटक एवं निबंध–परिभाषा, तत्व, विशेषताएँ, महत्व।

इकाई–2 भाषा, साहित्य, संस्कृति एवं समसामयिक संबंधित निबंध (प्रमुख साहित्कारों, पर्व–त्योहार एवं संस्कार से संबंधित निबंध)।

इकाई–3 आलोचना एवं समालोचना

सहायक ग्रंथें :

- कुँड़ुख़ लोक साहित्य – संकलन – जनजातीय कल्याण शोध संस्थान, राँची
- पुरखा ख़ीरी – अहलाद तिर्की
- कुँड़ुख़ कत्थ पंडी – पीयुस लकड़ा
- नम्हय एड़पा – जस्टिन एक्का
- कोड़ा राजी – विमल कुमार टोप्पो
- भरिया – डॉ० नारायण भगत
- कुँड़ुख़ चोन्हा कत्थटूड़ – भीखू तिर्की
- कुँड़ुख़ कत्थआइन (निबंध भाग) – महाबीर उराँव और चौठी उराँव

II. MAJOR COURSE – MJ 7 : कुँड़ुख़ भाषा विज्ञान

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. कुँड़ुख़ विद्यार्थियों को भाषा के स्वरूप और महत्व का ज्ञान प्राप्त होगा।
2. कुँड़ुख़ विद्यार्थी को एक सुत्र में बांधने वाली कुँड़ुख़ की विविध बोलियों से परिचत हो सकेंगे।
3. कुँड़ुख़ विद्यार्थियों को कुँड़ुख़ की शारीरिक इकाईयों, ध्वनि, शब्द, वाक्य आदि का ज्ञान हो सकेगा।
4. कुँड़ुख़ के अर्थ – विकास की जानकारी प्राप्त हो सकेगी।
5. कुँड़ुख़ विद्यार्थी उपयोगी लिपि के बारे में अपेक्षित ज्ञान प्राप्त होगा।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई–1 कुँड़ुख़ भाषा का परिचय, परिभाषा, उत्पत्ति, क्षेत्र विस्तार, वर्गीकरण, विशेषता, भाषा परिवर्तन के कारण, बोली और भाषा में अंतर।

इकाई– 2 ध्वनि विज्ञान, पद विज्ञान, वाक्य विज्ञान, अर्थ विज्ञान, लिपि, लिपि समस्या एवं संभावनाएँ

सहायकग्रंथें :

❖ हिन्दी और कुँड़ुख़ भाषा (क्रियाओं का प्रकात्मक अध्ययन) – डॉ० हरि उराँव
❖ कत्थ अरा कत्थ बिल्ली ईदऊ – मिखाइल तिग्गा
❖ कुँड़ुख़ ग्रामर – हॉन (कुँड़ुख़ अनुवाद) – डॉ० निर्मल मिंज
❖ भाषा विज्ञान – भोलानाथ तिवारी
❖ भाषा विज्ञान की भूमिका – देवेन्द्र नाथ शर्मा

I. MAJOR COURSE – MJ 8 : कुँड़ुख़ काव्य के विविध रूप

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. कुँड़ुख़ विद्यार्थी कुँड़ुख़ साहित्य के महाकाव्य, खण्ड काव्य एवं गीतिकाव्य से परिचित होंगे।
2. कुँड़ुख़ विद्यार्थी काव्य के महत्वपूर्ण उपादानों से परिचित हो सकेंगे।
3. कुँड़ुख़ विद्यार्थी कुँड़ुख़ छंद, रस, अलंकार एवं उनके विविध रूप को जान सकेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 कुँड़ुख़ महाकाव्य, खण्डकाव्य, गीतिकाव्य।

इकाई–2 रस, छंद, अलंकार–अनुप्रास, उपमा, उत्प्रेक्षा, रूपक, यमक, श्लेष, वक्रोक्ति, अतिश्योक्ति, विभावना।

सहायक ग्रंथें :

- ❖ सिलागाई – महली लिवनस तिर्की
- ❖ लील ख़ोरआ ख़ेख़ेल – डब्लू० जी० आर्चर एवं धरमदास लकड़ा
- ❖ साहित्य के तत्व और आयाम – विसेश्वर प्रसाद केशरी
- ❖ काव्य के रूप – गुलाब राय
- ❖ अलंकार मुक्तावली – आचार्य देवेन्द्र नाथ शर्मा
- ❖ अलंकार परिजात – नरोत्तम दास स्वामी
- ❖ काव्यशास्त्र – डॉ० भगीरथ मिश्र

II. MAJOR COURS – MJ 9 : कुँड़ुख़ पत्र–पत्रिकाओं का क्रमिक विकास

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ साहित्य के सम्पूर्ण पत्र – पत्रिकाओं से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी कुँड़ुख़ पत्र – पत्रिकाओं की क्रमिक विकास एवं इनके उद्देश्यों का समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी पत्र–पत्रिकाओं का साहित्य के योगदान को समझ सकेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाइ–1 कुँड़ुख़ पत्र–पत्रिकाओं का परिचय–दैनिक, साप्ताहिक, मासिक,

त्रैमासिक, अर्द्धवार्षिक एवं वार्षिक।

इकाई– 2 पत्र–पत्रिकाओं में उल्लेखित प्रमुख तथ्यों की जानकारी एवं उसका विश्लेषण।

इकाई– 3 कुँड़ुख़ पत्र–पत्रिकाओं की क्रमिक विकास एवं वर्तमान स्थिति

सहायक ग्रंथें :

❖ सरना फूल – सम्पादक – डॉ० हरि उराँव
❖ सिनगी दई – महली लिवनस तिर्की
❖ बकपुन – डॉ० हरि उराँव
❖ कुँड़ुख़ डहरे – प्रकाशक – कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
❖ नाम कुँड़ुख़त – डॉ० ए० तिर्की
❖ कुँड़ुख़ बओत – छत्तीसगढ़
❖ टेंको–बेंको – मंजू बाखला
❖ धुमकूड़िया – अहलाद तिर्की
❖ बिज बिनको – इग्नेस बेक
❖ एजरआ – प्रकाशक – कुँड़ुख़ प्रगतिशील समाज, छत्तीसगढ़
❖ कुँड़ुख़ कत्था बींड़रना – कुँड़ुख़ लिटरेरी सोसाईटी ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
❖ पड़हा – डॉ० बन्दे खलखो
❖ पुना घोख़ – संजय उराँव

I. ADVANCE MAJOR – AMJ 1 : झारखण्डी कानून एवं पारम्परिक शासन व्यवस्था

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगमपरिणामनिम्नवतहोगा :–

1. कुँड़ुख़ विद्यार्थी भूमि से संबंधित कानूनों से परिचित होंगे।
2. कुँड़ुख़ विद्यार्थी हक और अधिकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
3. कुँड़ुख़ विद्यार्थी पेसा एवं विल्किन्सन रूल से परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी झारखण्डी पारम्पारिक शासन व्यवस्था से अवगत होंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई–1 छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट 1908) एवं संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एसपीटी एक्ट)

इकाई– 2 पेसा (PESA) कानून 'द प्रोविजनल ऑफ पंचायत एक्टेंशनटू द शिड्यूल्ड एरिया–1996 एवं विल्किन्सन रूल।

इकाई– 3 मुण्डा–मानकी, पड़हा–पंचायत, माझी–परगनैत, डोकलो–सोहोर, ग्रामसभा, पंचायत, दिउरि, पाहन, पनभरा, महतो, दिवान, कोटवार, धूमकुड़िया, अखड़ा विशु सेंदरा।

सहायक ग्रंथें :

- छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट, 1908) – डी॰पी॰ नरूल्ला
- संताल परगना काश्तकारी अधिनियम (एसपीटी एक्ट) – क्राउन पब्लिकेशन्स
- झारखण्ड पंचायती राज अधिनियम, 2001 – रश्मि कात्यायन
- छोटानागपुर काश्तकारी अधिनियम (सीएनटी एक्ट, 1908) सामान्य परिचय और जानकारी – चन्द्रभूषण देवगम
- ग्राम पंचायत व्यवस्था : कितनी अच्छी, कितनी बुरी – पी॰एन॰एस॰सुरीन
- आदिवासी अधिकार – सं॰रमेश जेराई
- मैन्यूअल ऑफ झारखण्ड लैंड्स – रश्मि कात्यायन
- छोटानागपुर भूमि विधियाँ – एस॰एन॰श्रीवास्तव
- पंचायती राज चुनौतियाँ एवं संभावनाएँ – महिपाल
- उराँव सरना धर्म और संस्कृति – भिखू तिर्की
- भारतीय जनजातीय संस्कृति – गया पाण्डे

II. ADVANCE MAJOR – AMJ 2 :

लेखन एवं प्रारूपण विधि, वाक्यांश, शब्द एवं वाक्यों का अनुवाद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी लेखन प्रक्रिया को सीख सकेंगे।
2. किसी भी भाषा को कुँड़ुख़ में अनुवाद करने की कला सीख पायेंगे।
3. सभी प्रकार के कार्यालयी पत्र एवं संपादकीय पत्र लेखन को सीख पायेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 पत्र लेखन, कार्यालयी पत्र–व्यवहार, संपादकीय पत्र लेखन, आवेदन लेखन

इकाई– 2 हिन्दी/अंगेजी से कुँड़ुख़ भाषा में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद

इकाई– 3 कुँड़ुख़ भाषा से हिन्दी/अंग्रेजी में किसी गद्यांश अथवा पद्यांश का अनुवाद

सहायक ग्रंथें :

- कुँड़ुख़ भाषा व्याकरण एवं साहित्य (पत्र लेखन भाग) – महेश भगत
- आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना – डॉ॰वासुदेव नन्दन प्रसाद
- वृहत व्याकरण भास्कर – डॉ॰वचनदेव कुमार
- रचनात्मक लेखन – डॉ॰रमेश गौतम

I. ADVANCE MAJOR – AMJ 3 :

झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानी एवं शहीद

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी झारखण्ड के स्वतंत्रता सेनानीयों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
2. विद्यार्थी जनजातीय शहीदों को जान पायेंगे।
3. विद्यार्थी शहीदों के आहुति से प्रेरणा ले सकेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 सिद्धो–कान्हू, बाबा तिलका मांझी, भगवान बिरसा मुण्डा, गया मुण्डा, वीर बुधु भगत, जतरा टाना भगत, तेलंगा खड़िया, पोटो सरदार, नाराहो, मछुआ गागराई, महेश्वर जामुदा, मुर्मू, शेख भिखारी, गणपतराय, लाड़ो जोंको, सिनगीदई, माकी दई, नीलाम्बर–पिताम्बर।

इकाई– 2 अल्बर्ट एक्का, कार्तिक उराँव, अब्दुल हमीद, रघुनाथ महतो, शहीद निर्मल महतो, विनोद बिहारी महतो, शक्तिनाथ महतो, सुनीलमहतो, अमको सिमको लड़ाई।

सहायक ग्रंथें :

❖ वीर बुधू भगत संघर्ष गाथा – डॉ० राम किशोर भगत
❖ झारखण्ड के शहीद – डॉ० भुवनेश्वर अनुज
❖ झारखण्ड के शहीद – डॉ० दिवाकर मिंज

II. ADVANCE MAJOR – AMJ 4 :

झारखण्डी समुदाय के संस्कार एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी सभी प्रकार के संस्कारों को जान पायेंगे।
2. विद्यार्थी झारखण्ड के सभी संस्कृतियों से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी जनजातीय गाँव के प्रथागत/रूढ़ीगत मुखियाओं के बारे में जान सकेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 जन्म संस्कार, नामकरण संस्कार, कर्णवेद संस्कार, विवाह संस्कार, मृत्यु संस्कार, हड़गड़ी संस्कार (कोहा बेंजा)

इकाई– 2 मगे, बा, सरहुल, करम, सोहराय, सोहराय, जतरा, टुसू, जोमनवा/नवाखानी, मुड़मा जतरा।

सहायक ग्रंथें :

- उराँव सरना धर्म और संस्कृति – भिखू तिर्की
- उराँव संस्कृति – मिखाइल कुजूर
- उराँव संस्कृति परिवर्तन एवं दिशाएँ – डॉ० शांति खलखो
- समाज और संस्कृति – डॉ० श्याम चरण दुबे
- भारतीय जनजातीय संस्कृति – गया पाण्डे
- समाजिक मानवशास्त्र परिचय – मजुमदार एवं मदन
- कुँड़ुख़ भाषा कला और संस्कृति – जुलियस कुल्लू

I. <u>INTRODUCTORY REGULAR COURSE (IRC) :</u> कुँड़ुख़ साहित्य का इतिहास, कवि एवं काव्य :

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा–

1. विद्यार्थी कुँड़ुख़ साहित्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रारंभिक और विकासात्मक स्वरूप से परिचित हो सकेंगे।
2. कुँड़ुख़ साहित्य की उद्भव, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार और विशेषताओं के बार में जान सकेंगे।
3. कुँड़ुख़ का विधा साहित्य से परिचित हो सकेंगे।
4. कुँड़ुख़ साहित्य के कवियों से परिचित हो सकेंगे।

प्रस्तावित संरचना

इकाई– 1 कुँड़ुख़ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उद्भव–विकास, नामकरण, लेखन परम्परा, क्षेत्र–विस्तार, विशेषताएँ।

इकाई– 2 कुँड़ुख़ का लोकसाहित्य एवं शिष्ट साहित्य

(क) लोक साहित्य– लोकगीत, लोककथा एवं प्रकीर्ण साहित्य

(ख) शिष्ट साहित्य–

1. पद्य साहित्य– गीत एवं कविताएँ
2. गद्य साहित्य– कहानी, उपन्यास, नाटक, निबंध एवं जीवनी

इकाई–3 कवि एवं काव्य

(क) प्राचीन काल

(ख) मध्य काल

(ग) आधुनिक काल

सहायक ग्रंथें :

- ❖ उराँव भाषा और साहित्य – जगदीश त्रिगुणायत
- ❖ कुँड़ुख़ भाषा साहित्य एक परीचय – विजय आशीष कुजूर
- ❖ छोटानागपुर के उराँव रीति–रिवाज – डॉ० नारायण भगत
- ❖ कुँड़ुख़ भाषा–साहित्य का उद्भव एवं विकास – महेश भगत
- ❖ कुँड़ुख़ शिष्ट साहित्य (का विश्लेषणात्मक अध्ययन) – डॉ० बन्दे खलखो
- ❖ जनजातीय भाषाएँ और मिशनरी – नागेश्वर सिंह

I. MINOR ELECTIVE (MN 1) : कला, साहित्य एवं संस्कृति

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी कला एवं साहित्य के संबंध में जान सकेंगे।
2. विद्यार्थी कला एवं समाज के बीच परस्पारिक संबंध के बारे में समझ सकेंगे।
3. विद्यार्थी कुँडुख़ के सभी कला एवं संस्कृति को जान पायेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 कला का सामान्य परिचय, वर्गीकरण, कलाओं का महत्व, झारखण्ड की पारम्परिक प्रमुख कलाएँ – मिट्टी कला, चित्र कला, काष्ठ कला, बाँस कला, हस्तकला (सिलाई–कढ़ाई–बुनाई)

इकाई– 2 कला, साहित्य एवं समाज का अन्तःसम्बन्ध

इकाई– 3 कला एवं संस्कृति का अन्तःसम्बन्ध

सहायक ग्रंथें :

- झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ – डॉ० गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- मांदर का सुमधुर ताल – मतियस टोप्पो
- मिंजूर झईल – जुलियस तिग्गा
- तुलिका (झारखण्ड की जनजातीय चित्रकला) – डॉ० आदित्य कुमार सिंह
- कुँडुख़ भाषा कला और संस्कृति – जुलियस कुल्लू
- कला – हंस कुमार तिवारी

I. MINOR ELECTIVE (MN 2) : पारम्परिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य शैलियाँ

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी अपनी जाति की पारंपरिक वाद्य यंत्र, गीत एवं नृत्य से परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी वाद्य यंत्र में उपयोग की जाने वाले सामग्री के बारे में जान पायेंगे।
3. विद्यार्थी सभी प्रकार के गीत के राग एवं नृत्य शैली को अपने जीवन में उतार सकेंगे।
4. विद्यार्थी इन सभी चिजों की विशेषता और महत्व को जान सकेंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 बनावट, प्रकृति, आकार–प्रकार (मांदर, नगाड़ा, ढोल, रूतु, बनम, सेकोःए, करताल, चयोम, गिनी, सकोवाँ, घंटा, भेर, नरसिंघा, झांझ, ठेचका, रबका, टुहिला, ढांक, गुगुरा)

इकाई– 2 नृत्य की परिभाषा, प्रकार, महत्व, विशेषता एवं पारम्परिक आभूषण

इकाई– 3 नटुआ, छऊ, पईका, घोड़ानाच, जदुर, करम, सरहुल, गेना, जतरा, केमटा, झुमइर, लहसुआ, भनसरिया, डमकच नृत्य इत्यादि।

सहायकग्रंथें :

- ❖ झारखण्ड का लोक संगीत – डॉ० गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ झारखण्ड की पारम्परिक कलाएँ – डॉ० गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'
- ❖ अराध्यदेव वृक्ष करम – सरन उराँव
- ❖ झारखण्ड इन्साइक्लोपीडिया भाग 4 – रणेन्द्र कुमार
- ❖ झारखण्ड के वाद्य यंत्र – डॉ० गिरिधारी राम गौंझू 'गिरिराज'

- ❖ नोट – पाठ्य सामग्री हेतु विभिन्न पुस्तकों, शोध आलेखों एवं पत्र–पत्रिकाओं का अध्ययन अपेक्षित।

II. MINOR ELECTIVE (MN 3) :

झारखण्डी समुदाय का सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला

पाठ्यक्रम के इस अंश का अधिगम परिणाम निम्नवत होगा :–

1. विद्यार्थी समाजिक सांस्कृतिक केन्द्र एवं झारखण्डी पाक् कला के बारे में परिचित होंगे।
2. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय पाकवानों से परिचित होंगे।
3. विद्यार्थी सभी प्रकार के जनजातीय युवागृहों से परिचित होंगे।
4. विद्यार्थी रोग निरोधक पाकवानों से परिचत होंगे।

1.**प्रस्तावित संरचना**

इकाई– 1 गितिःओड़ाः, गितिः ओअ, धुमकुड़िया, गिता'चाड़ी, गिपितिच् टाँडी, माँझी आखड़ा, सुतानटांडी।

इकाई– 2 अखड़ा–परिभाषा, सामाजिक महत्व एवं विशेषता

इकाई– 3 मडुआ रोटी, मकई–सरई–महुआ लेट्ठो, धुसका, खपरारोटी, सकमलद्, दुललद्, छिलकारोटी, डुम्बुः, मीट–मछलीपकाने की कला, लद् जिलु, लेटे मंडि, कंज्जी मंडि, गुड़ पीठा, अरसा रोटी डंगरी आदि।

सहायक ग्रंथें :

❖ भारतीय जनजातीय संस्कृति – गया पाण्डे
❖ सामाजिक मानवशास्त्र परिचय – मजुमदार एवं मदन
❖ उराँव सरना धर्म और संस्कृति – भिखू तिर्की
❖ खड़िया, मुण्डा और उराँव संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन –जोवाकिम डुंगडुंग एस० जे०

MIL- कुँड़ुख़ व्याकरण एवं संप्रेषण (संचार)

(अ) निर्धारित पाठ्य पुस्तकों का पद्य भाग पाठ्य होगा।

(आ) व्याकरण अध्येय होगा।

(ई) निबंध – ऋतु पर्व, राष्ट्रीय समस्याएँ, भाषा, साहित्य, संस्कृति, प्रकृति, यात्रा वर्णन आदि।

निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ :

(अ) पाठ्य पुस्तक –

1. कुँड़ुख़ कत्थ, खीरी अरा डण्डी (केवल पद्य भाग)
   संपादक – एडमंड टोप्पो – प्रकाशक राँची विश्वविद्यालय, राँची।

(आ) व्याकरण –

1. खोरलड़ंग	:	गोपाल उराँव
2. कुँड़ुख़ नैगस	:	पी॰सी॰ बेक
3. कुँड़ुख़ सइहा	:	आहलाद तिर्की
4. कत्थअइन	:	महाबीर उराँव